Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 3rd Dec. 2018, Revised on 18th Dec. 2018; Accepted 26th Dec. 2018

शोधपत्र

विद्यार्थियों की हिन्दी भाषायी दक्षता का अध्ययन

* डॉ. बी.एल. श्रीमाली सह आचार्य
लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी.टी.ई.),
डबोक, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय उदयपुर (राज.)
Email: shrimalibl@gmail.com, मोबाइल नं. 09460693771

मुख्य शब्द : *शिक्षक, हिन्दी, भाषायी दक्षता, विद्यार्थी आदि।*

सारांश

भारत देश में विद्यालय स्तर पर सामान्यतः तीन भाषाओं का अध्ययन होता है। इनमें से भी अधिकांशतः राज्यों में हिन्दी भाषा को प्रथम भाषा (First Language) के रूप में पढ़ाया जाता है। राजस्थान राज्य में प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी का अध्यापन होता है। चूंकि यह आम बलोचाल एवं व्यवहार की भाषा है अतः विद्यार्थी, शिक्षक एवं अभिभावक इस भाषा के शिक्षण एवं अधिगम व्यवहार के सन्दर्भ में कुछ कम जागरूक प्रतीत होते हैं जिसके परिणास्वरूप विद्यार्थी हिन्दी भाषा सम्प्रेषण में कमजोर, न्यून आत्मविश्वासी, असफल एवं दोषपूर्ण भाषिक व्यवहार से युक्त दिखाई देते हैं। इस परिकल्पना को आधार बनाकर यह शोधकार्य करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

वाणी द्वारा मनुष्य अपने भाव व्यक्त करता है। भाषा द्वारा वाणी का अभिव्यक्तिकरण होता है। समाज में रहने के कारण मनुष्य को सदा विचार विनिमय की आवश्यकता पड़ती है। विचार विनिमय का मुख्य आधार भाषा है। जब भाषा नहीं थी तब मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति के लिए निश्चित संकेतों का प्रयोग करता था। धीरे–धीरे मनुष्य की अभिव्यक्ति में प्रौढ़ता आती गई। एक समय आया जब मनुष्य को स्वर का सहारा मिला। तत्पश्चात् व्यक्ति विधिवत भाषा के माध्यम से अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने लगा एवं दूसरों के विचारों को स्वयं भली–भॉति समझने लगा। इस प्रकार भाषा का उत्तरोत्तर विकास होने लगा एवं दैनिक व्यवहार में इसका सम्प्रेषणात्मक उपयोग होने लगा।

सामान्यतः समाज में यह धारणा प्रचलित है कि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में भाषायी सन्दर्भ में अधिक कमजोर है। सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की भाषायी दक्षता में कितना अन्तर है? छात्र एवं छात्राओं की भाषायी दक्षता में कितना अन्तर है? इत्यादि प्रश्नों का शोध आधारित उत्तर खोजने का प्रयास इस शोध कार्य में किया गया है।

समस्या कथन

विद्यार्थियों की हिन्दी भाषायी दक्षता का अध्ययन।

शोध उद्देश्य –

1. सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषायी दक्षता का अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषायी दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता का अध्ययन करना।
4. सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. निजी विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता का अध्ययन करना।
6. निजी विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं निजी विद्यालय के छात्रों की हिन्दी भाषायी दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. सरकारी विद्यालय की छात्राओं एवं निजी विद्यालय की छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शून्य परिकल्पनाएँ

1. सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. निजी विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं निजी विद्यालय के छात्रों की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. सरकारी विद्यालय की छात्राओं एवं निजी विद्यालय की छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

न्यादर्श चयन

1. न्यादर्श में उदयपुर शहर के दो राजकीय एवं दो निजी विद्यालयों का चयन यादृच्छिक चयन विधि ;त्ंदकवउ ैउचसपदहद्ध के आधार पर किया गया।
2. चयनित विद्यालयों में से दो बालक विद्यालय एवं दो बालिका विद्यालय थे।
3. इन चारों चयनित विद्यालयों में से प्रत्येक से यादृच्छिक चयन विधि के आधार पर कक्षा नवमीं के 25–25 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इस प्रकार न्यादर्श के रूप में कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

हिन्दी भाषायी दक्षता

इस शोध में हिन्दी भाषायी दक्षता से तात्पर्य विद्यार्थियों का हिन्दी भाषा में व्याकरणिक ज्ञान, वर्तनीगत ज्ञान, वाक्य संरचनागत ज्ञान, भाषा विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान, हिन्दी में सम्प्रेषणात्मक ज्ञान इत्यादि के औपचारिक उपयोग से है। इसका निर्धारण न्यूनतम अधिगम स्तर के आधार पर किया गया।

उपकरण

इस शोध में स्वनिर्मित उपकरण (हिन्दी भाषायी दक्षता प्रश्नावली) का उपयोग किया गया।

शोध विधि – सर्वेक्षण विधि।

सांख्यिकीय तकनीक

प्राप्त दत्तों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' परीक्षण के आधार पर किया गया।

दत्त विश्लेषण एवं व्याख्या – प्राप्त दत्तों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया।

तालिका संख्या : 01

सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषायी दक्षता का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी'मान

विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान	सार्थक/असार्थक अन्तर
सरकारी	44.82	8.61	.18	असार्थक अन्तर
निजी	45.14	8.76		

Df = 98

सारणी मान

सार्थकता/विश्वास स्तर .05 स्तर पर = 1.98

.01 स्तर पर = 2.63

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका यह दर्शाती है कि सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषायी दक्षता का संगणित 'टी' मान .18 प्राप्त हुआ है जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.98 एवं .05 स्तर पर 2.63) से कम है जो यह स्पष्ट करता है सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त दत्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना संख्या 01 सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या : 02

सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान

सरकारी विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान	सार्थक/असार्थक अन्तर
छात्र	41.56	8.74	2.77	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर
छात्रा	48.00	7.88		

Df =48

सारणी मान

सार्थकता/विश्वास स्तर .05 स्तर पर = 1.98

.01 स्तर पर = 2.63

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका यह दर्शाती है कि सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता का संगणित 'टी' मान 2.77 प्राप्त हुआ। जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.01 एवं .01 स्तर पर 2.68) से अधिक है अतः यह कहा जा सकता है कि सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। इसमें सरकारी विद्यालय के छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता छात्रों की तुलना में उच्च पाई गई।

निष्कर्ष

उपर्युक्त दत्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना संख्या 02 सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, निरस्त की जाती है।

तालिका संख्या : 03

निजी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान

निजी विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान	सार्थक/असार्थक अन्तर
छात्र	45.88	6.56	.54	सार्थक अन्तर नहीं
छात्रा	44.44	10.44		

Df = 48

सारणी मान

सार्थकता/विश्वास स्तर .05 स्तर पर = 2.01

.01 स्तर पर = 2.68

व्याख्या

तालिका संख्या 03 यह दर्शाती है कि निजी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं हिन्दी भाषायी दक्षता में संगणित 'टी' मान .54 प्राप्त हुआ, जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.01 एवं .01 स्तर पर 2.68) से कम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त दत्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना संख्या 03 निजी विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या : 04

सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं निजी विद्यालय के छात्रों की हिन्दी भाषायी दक्षता का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान

छात्र	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान	सार्थक/असार्थक अन्तर

सरकारी विद्यालय	41.56	8.74	.90	सार्थक अन्तर नहीं
निजी विद्यालय	45.88	6.56		

Df = 48)

सारणी मान

सार्थकता / विश्वास स्तर .05 स्तर पर = 2.01

.01 स्तर पर = 2.68

व्याख्या

तालिका संख्या 04 यह दर्शाती है कि सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं निजी विद्यालय के छात्रों की हिन्दी भाषायी दक्षता में संगणित 'टी' मान .90 प्राप्त हुआ है जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.01 एवं .01 स्तर पर 2.68) से कम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं निजी विद्यालय के छात्रों की हिन्दी भाषायी में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त दत्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना संख्या 04 सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं निजी विद्यालय के छात्रों की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या : 05

सरकारी विद्यालय की छात्राओं एवं निजी विद्यालय की छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान

छात्राएँ	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान	सार्थक / असार्थक अन्तर
सरकारी विद्यालय	48.08	7.88	1.40	सार्थक अन्तर नहीं
निजी विद्यालय	44.4	10.44		

Df = 48

सारणी मान

सार्थकता / विश्वास स्तर .05 स्तर पर = 2.01

.01 स्तर पर = 2.68

व्याख्या

तालिका संख्या 05 यह दर्शाती है कि सरकारी विद्यालय की छात्राओं एवं निजी विद्यालय की छात्रों का संगणित 'टी' मान 1.40 प्राप्त हुआ जो सारणी मान (.05 स्तर पर 2.01 एवं .01 स्तर पर 2.68) से कम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालय की छात्राओं एवं निजी विद्यालय की छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त दत्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पूर्व निर्धारित शून्य परिकल्पना संख्या 05 सरकारी विद्यालय की छात्राओं एवं निजी विद्यालय की छात्राओं की हिन्दी भाषायी दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकार की जाती है।

शैक्षिक निहितार्थ

उपर्युक्त शोध एवं दत्तों के विश्लेषणोपरान्त निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ उभरकर सामने आते हैं –

1. हिन्दी भारत देश की राष्ट्रीय भाषा है अतः इसको सीखने का भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। इस दृष्टि से भारत के विद्यालयों में माध्यमिक स्तर तक इस भाषा को प्रथम भाषा (First Language) के रूप में पढ़ाया जाता है। परन्तु चूंकि यह हमारी मातृभाषा है अतः विद्यार्थी, शिक्षक एवं अभिभावक इसके अध्ययन, शिक्षण एवं अधिगम को गम्भीरता से नहीं लेते हैं। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की हिन्दी भाषायी दक्षता उत्तरोत्तर निम्न होती जा रही है। अतः शिक्षकों को यह शोधकार्य सुझाव प्रदान करता है कि विद्यार्थी हिन्दी भषायी दक्षता के जिस क्षेत्र के कमजोर है उस पर अतिरिक्त शिक्षण कर विद्यार्थी को दक्ष करे।
2. हिन्दी भाषायी दक्षता प्रश्नावली का प्रशासन कर निदानात्मक परीक्षण करे एवं तद्नुसार शिक्षण करना चाहिए।
3. कमजोरी वाले क्षेत्रों को पहचाना जाए एवं उनसे विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को अवगत करवाते हुए उनके अधिगम हेतु जागरूक किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Aggarawal, Y.P. (1988). *Better Sampling : Concept, Techniques and Evaluation,* New Delhi : Sterling Publishers Pvt. Ltd.
2 Best, J.W. and Kahan Jones V. (1996). *Research in Education,* New Delhi : Prentice Hall, Pvt. Ltd.
3 ढोंढियाल, एस.एन.; फाटक, ए.बी. (2003). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, नई दिल्ली : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
4 गुप्ता, एस.पी. (2007). सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
5 कौल, लोकेश (2012). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा. लि.।
6 त्रिपाठी, मधुसुदन (2007). शिक्षा अनुसंधान एवं सांख्यिकी, ओमेगा पब्लिकेशन्स।

*** Corresponding Author:**
डॉ. बी.एल. श्रीमाली, *सह आचार्य*
लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी.टी.ई.),
डबोक, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय उदयपुर (राजस्थान)
Email: shrimalibl@gmail.com, मोबाइल नं- 09460693771